रात्रि क्लास :– ॐ। जानते हो श्रीमत पर हम अपने लिए राज्य स्थापन करते हैं गुप्त रीति। और कोई जान न सके। भला कैसे स्थापन करते हो? बस, पवित्र रहना है। तो बाप ने कहा है माया ने दुख दिया है इसको छोड़ो। मायाजीत जगतजीत बनो। मन को जीतने की बात ही नहीं है। मन तो शान्त, शान्ति देश में रहता है। यहाँ शरीर है तो शान्त रह ना सके। तो शान्तिधाम है परमधाम। यहाँ समझानी मिलती रहती है तो चिन्तन भी चलता रहता है। वहाँ सेन्टर पर तो आया, कथा सुनी और गया। धंधे में खलास, यहाँ ताजा–2 रहता है; इसलिए यहाँ बच्चे रिफ्रेश होने आते हैं। दुनिया की बुद्धि में नहीं रहता कि भारत परमात्मा का बर्थ प्लेस है। शिव जयन्ती सिर्फ मनाते, अर्थ कुछ भी नहीं समझते; क्योंकि बुद्धि को गॉडरेज का ताला लगा हुआ है। यहाँ सुनने से तुमको नशा रहता है कि शरीर छोड़ हम अमरलोक में जावेंगे। सतयुग में यह न होगा कि फलाना मर गया। नहीं। जब पुराना चोला छोड़ेंगे, नया लेंगे तो खुशी होगी, बाजा बजेगा न! अच्छा, गुडनाइट।